आधी आबादी का पूरा जज़्बा

मार्च का महिना.... सुबह-शाम की गुनगुनी सर्दी के बीच दिनभर की गर्मी। पलाश के फूलों से लेकर होली की दस्तक। मौसम की इस करवट के बीच महिलाओं के हकों की बात करता त्यौहार "महिला दिवस" भी इसी महीने की ०८ तारीख को आता है। दुनिया भर की महिलाएं और महिलाओं के हकों की बात करने वाले लोग -साथी इसे बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। इस बार इस महिला दिवस पर दक्षिणी राजस्थान की ०३ ऐसी महिलाओं की कहानियां, जिन्होंने खुद के संघर्ष से आने वाले वक़्त में महिलाओं को एक नयी दिशा दी। इन कहानियों के किरदार आप-हम जैसे ही सामान्य है; किन्तु उन्होंने अपने हौंसलों को इतना बुलंद रखा कि आज सैकड़ों महिलाएं उनसे प्रेरणा लेकर आगे बढ़ रही हैं।

लाड़ लोहार: माहवारी मिशन को ही ज़िन्दगी बना लिया

गाड़िया लोहार समुदाय- १५वीं शताब्दी में मेवाड़ के महाराणा प्रताप को दिए एक वचन मात्र से आज तक अपने पक्के बनाये घर में नहीं रहता। अपनी एक बैलगाड़ी पर ही अपना पूरा कुटुंब-घर लेकर चलने वाले इस समुदाय को केंद्र और राज्य सरकारों की बहुत सी कोशिशों के बाद भी आज तक पूरी तरह से स्थायी रूप से बसाने में कोई अच्छी सफलता नहीं मिल सकी है। इसी समुदाय की एक महिला को माहवारी के दौरान मटका छू लेने पर उसके ससुराल वालों की इतनी पिटाई झेलनी पड़ी कि उसे अपना ससुराल छोड़कर पीहर आना पड़ा। बस तभी से उस महिला में ऐसी लगन लगी कि आज वह महिला पूरे दक्षिणी राजस्थान में "पेड वुमन" के नाम से जानी जाती है।

३४ साल की लाड कुमारी बताती हैं कि जब ससुराल से बेइज्जत होकर वापस पीहर आई, बस तभी सोच लिया कि माहवारी के नाम पर किसी को अब हिंसा नहीं झेलनी पड़ेगी। लाड ने पहले एक स्वयंसेवी संस्था में रहकर सूती कपड़े के पेड बनाना सीखा और फिर उसे अपने समुदाय की महिलाओं को सिखाना शुरू किया। घर- समुदाय के पुरुषों ने इसका विरोध किया किन्तु लाड पीछे नहीं हटी। धीरे धीरे लाड ने स्कूल जाने वाली लड़कियों और कच्ची बस्ती की अन्य महिलाओं को अपनी मुहिम में शामिल कर लिया। असरार साहब का एक शेर है, जिसे शायद लाड ने संजीदगी से ले लिया। वे कुछ यूँ फरमाते हैं कि,

"तेरे माथे पर ये आँचल बहुत ही खूब है मगर,

तू इस आँचल से एक परचम बना लेती तो अच्छा था"

लाड की मुहिम रंग लाई, और इनके बनाये पेड महिलाओं को पसंद आने लगे। ये कपड़े के (पुनः उपयोग किये जा सकने वाले) पेड ३५ रुपये प्रति की डर से होते थे, जिसे कच्ची बस्ती की महिलाएं खरीद नहीं पाती थी। ऐसे में लाड ने तय किया कि वो हर एक महिला को "लाड कुमारी" बनाएगी। लिहाजा, उसने बस्ती में सभी को ये पेड सिलना और घर के पुराने सूती कपड़ों से इसे तैयार करके उपयोग करना सिखाया। माहवारी के दौरान होने वाली सामाजिक रोकटोक को ख़त्म करने और महिलाओं के स्वास्थ्य-पोषण को सुधारने की दिशा में भी लाड ने बेहतर काम करके दिखाया।

आज लाड खुद पढ़ भी रही है। उसने २०२० में दसवीं की परीक्षा दी और पास हुई। फ़िलहाल वह बारहवीं की परीक्षा की तैयारी कर रही है। लाड की कहानी को राष्ट्रीय स्तर के मीडिया ने भी प्रमुखता से प्रकाशित किया। फलस्वरूप उसे कुछ पुरस्कार मिले। इन पुरस्कारों की राशि से वह महिलाओं को सिलाई सिखा रही है।

इरम खान: पर्यावरण की अगुआ

जो लोग उदयपुर में पर्यावरण संरक्षण पर काम कर रहे हैं, वे "पुकार अभियान" को ज़रूर जानते हैं। इस अभियान के अंतर्गत विभिन्न कॉलेज स्टूडेंट्स ने मिलकर शहर के एक दर्जन से ज्यादा "मर चुके" पार्कों को फिर से हरा भरा कर दिया था। इसी अभियान में पहली बार इरम खान भी शामिल हुई। इरम तब "नेहरु युवा केंद्र" में समन्वयक हुआ करती थी। जब उन्होंने युवाओं के जज्बे को करीब से देखा और हजारों पौधों को शहर के पार्कों में बढ़ते देखा तो इरम को उदयपुर के आस पास की पहाड़ियों पर घटती जा रही हरियाली और ख़त्म होते जा रहे स्थानीय पेड़ याद आये।

इरम खान ने नेहरु युवा केंद्र संगठन को ही अपनी ताकत बनाया। उदयपुर जिले में इस राजकीय संगठन के अंतर्गत २०० से ज्यादा सक्रिय युवा समूह हैं। इरम ने कई समूहों को अगले मानसून में अपने गाँव के आस पास की पहाड़ियों पर स्थानीय परिवेश के पेड़ जैसे गूलर, पलाश, नीम, देशी बबूल- खेजड़ी, आम, धोक, गुलमोहर आदि लगाने के लिए प्रेरित किया। पौधे उपलब्ध करवाने को लेकर उसने जिला कलक्टर कार्यालय और वन विभाग के दर्जनों चक्कर लगाए। परिणाम ये रहा कि जिले की विभिन्न नर्सरियों से मुफ्त पौधे मिल गए।

पहली बारिश के बाद तकरीबन ६०% पौधे जिन्दा रहे और साल दर साल बढ़ते चले। जब शुरूआती परिणाम अच्छा रहा तो इरम खान ने अगले बरस और ज्यादा पंचायतों को अपने अभियान से जोड़ा। इरम और उसके युवा समूहों ने इसे एक अभियान का स्वरुप दे दिया। उदयपुर के आस-पास की गिर्वा, झाडोल, गोगुन्दा, खेरवाडा, सराडा की कई अरावली की पहाड़ियां फिर से हरी भरी होने लगी।

इरम ने अगले कदम के तौर पर जिले के आंगनवाडी केन्द्रों पर फलदार पौधे लगाने की मुहिम हाथ में ली। कोरोना के बाद बच्चों के पोषण स्तर को सुधारने के लिए इरम पिछले दो सालों से जिले के आंगनवाडी केन्द्रों में सहजन, आम, अमरुद के पौधे लगवा रही है और उन पौधों की सार-संभाल के लिए उन्हें गाँव के लोगों को गोद दे रही हैं। इरम वर्तमान में एक यूएन एजेंसी में काम करते हुए उदयपुर में जल-जंगल और स्वच्छता विषयों पर जन जागरूकता निर्माण कार्य कर रही हैं। वे एकल महिला है और बेटी के साथ फ़िलहाल उदयपुर में ही रह रही हैं।

मंजू खटीक: आठवीं पास किन्तु क़ानून की हर धारा मुंह ज़ुबानी याद

मंजू खटीक एक दिन बस द्वारा भीलवाड़ा से उदयपुर लौट रही थी। पास ही की सीट पर उसने एक महिला को सुबकते हुए पाया। पहले लगा, शायद घर-परिवार में कोई गुज़र गया होगा, उसी का दुःख है। पर बातचीत से पता चला कि आटा- साटा प्रथा (दो परिवारों में शादी के लिए परस्पर लड़की देना और लेना) के चलते उसे उसके घर से निकाल दिया था। चूँकि इस युवती के भाई ने अपनी पत्नी को वापस भेज दिया था सो उसे भी अपना घर छोड़कर वापस लौटना पड़ रहा था। मंजू खटीक इस प्रकार की प्रथाओं के परिणाम तो जानती थी पर आज पहली बार उनका साक्षात्कार हुआ था। मंजू उस महिला को लेकर थाने पहुंची। दोनों पक्षों को बुलाया गया और उस युवती को पुनः ससुराल भेजा गया।

बस तभी से मंजू ने तय कर लिया कि उसे औरतों के हक के लिए आवाज़ उठानी है। मंजू ने अपनी समझ बनानी शुरू की और पूरे दक्षिणी राजस्थान; खासतौर से राजसमन्द, भीलवाड़ा और उदयपुर को अपना कार्यक्षेत्र बना लिया। उन्होंने अपने काम को आगे बढाने के लिए शहर- गाँव की निर्वाचित महिला जनप्रतिनिधियों को चुना। वे उन्हें प्रशिक्षण देती और अपने अपने इलाके में औरतों के हक में काम करने के लिए प्रेरित करती। देखते ही देखते मंजू के पास १२०० से अधिक महिलाओं का एक मज़बूत संगठन खड़ा हो गया। स्थानीय संस्था "जतन" ने मंजू को इस काम में काफी सहायता प्रदान की। आज स्थिति ये है कि आस पास के पुलिस थाने भी महिलाओं से जुड़े मसलों पर मंजू से सलाह लेते हैं।

मंजू याद करते हुए कहती हैं। भीलवाड़ा के रायपुर पुलिस थाने से एक दिन एक पुलिस वाले का फोन आया। वो परेशान था। कारण था कि गाँव में होने वाले एक बाल विवाह को रुकवाने के नाम पर वहां की एक महिला वार्ड पंच वहां मौजूद लोगों को भोजन नहीं करने दे रही थी। पूरा समाज बिना भोजन के बैठा था। ऐसे में मंजू जी ने उस पुलिसकर्मी और जाति-पंचों को विश्वास में लिया। उनके माध्यम से समाज को यह सन्देश देने की कोशिश की कि बाल विवाह करना और उसमे शामिल होना; दोनों अपराध है। वह महिला वार्डपंच केवल कानून का साथ देते हुए २ नाबालिगों की ज़िन्दगी तबाह होने से बचाना चाह रही है। मंजू जी की बात और आत्मविश्वास का असर हुआ । परिणाम यह हुआ कि वह बालविवाह रुक गया। मंजू के अनुसार यह उसकी नहीं; बल्कि उस महिला वार्डपंच की जीत थी।

चलते चलते,

इस देश-दुनिया में कई महिलाएं हैं, जो चुपचाप बस इस समाज-देश की तरक्की के लिए काम किये जा रही हैं । किसी निर्माणाधीन मकान में रेत-सीमेंट उठाती महिला से लेकर न्यूज़ रूम में कैमरे के सामने बैठी महिला और हमारे साथ कंधे से कन्धा मिलाकर काम करने वाली हमारी सहयोगी तक; ये सभी वो आधी आबादी हैं, जिस से शेष रही आधी आबादी का वजूद है। देश के विकास को और अधिक आगे ले जाने के लिए ज़रूरी है कि न केवल उनके काम का सम्मान किया जाए बल्कि उन्हें वो स्पेस दिया जाए, जहाँ वे तमाम डर, खौफ के परे अपनी पूरी क्षमता का उपयोग कर पाए। शकील जमाली साहब के इस शेर के साथ आप सभी को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की बधाई।

"अभी रोशन हुआ जाता है रास्ता,

वो देखो उधर से एक औरत आ रही है"

(लेख: ओम, अर्बन95, उदयपुर)